

ईश्वर की खोज: एक व्यापक बाइबल अध्ययन दस्तावेज़

यह दस्तावेज़ ईश्वर की खोज; विषय पर चर्चा किए गए सभी बाइबल पदों और अंशों को संकलित और व्यवस्थित करता है। यह मूल सामग्री और बाद के संवर्द्धनों से लिया गया है, और स्पष्टता के लिए प्रत्येक प्रविष्टि को पद/पाठ, संदर्भ और व्याख्या के साथ संरचित करता है। अनुभागों को तार्किक रूप से समूहीकृत किया गया है: मूल पदों से शुरू होकर, सामान्य परिवर्धनों के बाद, और भजन संहिता 105:4 पर विशेष रूप से आधारित अंशों के साथ समाप्त होता है। यह एक सुसंगत अध्ययन संसाधन बनाता है जो ईश्वर की खोज में दृढ़ता, पूर्ण समर्पण और पुरस्कारों पर जोर देता है।

ईश्वर की खोज

मत्ती 7:7-8

□ वचन: मांगो, और तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, और तुम पाओगे; खटखटाओ, और तुम्हारे लिए द्वार खुल जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो खोजता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खुल जाता है। □ संदर्भ: यीशु के पर्वतीय उपदेश का एक अंश, जिसमें वे प्रार्थना और परमेश्वर की प्रतिक्रिया के स्वरूप के बारे में सिखाते हैं। □ व्याख्या: यीशु न केवल परमेश्वर को, बल्कि उनकी इच्छा को भी निरंतर खोजते रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ वादा यह है कि जो लोग सक्रिय रूप से और निरंतर परमेश्वर की खोज करते हैं, परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं।

मत्ती 7:13-14

□ पाठ: तंग द्वार से प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा द्वार और चौड़ा मार्ग विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से लोग उससे होकर प्रवेश करते हैं। परन्तु छोटा द्वार और तंग मार्ग जीवन की ओर ले जाता है, और केवल कुछ ही लोग उसे पाते हैं। □ संदर्भ: ये पद पर्वतीय उपदेश के अंत में आते हैं, जहाँ यीशु अपने अनुयायियों के लिए जीवन के मार्ग के बारे में सिखाते हैं। □ व्याख्या: तंग द्वार: यीशु लाक्षणिक रूप से उद्धार या ईश्वर में सच्चे जीवन के मार्ग को तंग बताते हैं, यह सुझाव देते हुए कि इसके लिए दृढ़ संकल्प, अनुशासन और अक्सर सामाजिक मानदंडों या आसान, अधिक लोकप्रिय विकल्पों के विरुद्ध जाने की आवश्यकता होती है। □ ईश्वर की खोज: ये पद संकेत देते हैं कि ईश्वर की खोज मानवता के लिए सामान्य मार्ग नहीं है; इसके लिए एक सक्रिय चुनाव की आवश्यकता होती है। जोर इस बात पर है कि यह मार्ग चुनने वालों की कठिनाई और अल्पसंख्यकों पर है, यह उजागर करते हुए कि वास्तव में ईश्वर की खोज केवल भीड़ का अनुसरण करना नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत प्रतिबद्धता और कभी-कभी कम चुने हुए मार्ग को चुनना है।

मत्ती 6:33

□ पाठ: परन्तु सबसे पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजो, और ये सब चीज़ें तुम्हें दी जाएँगी। □ संदर्भ: पर्वतीय उपदेश का एक भाग, यह पद उस खंड से लिया गया है जहाँ यीशु भौतिक आवश्यकताओं के बारे में चिंता करने की बात करते हैं। □ व्याख्या: पहले खोजो: यह निर्देश अनुयायियों को भोजन और वस्त्र जैसी बुनियादी आवश्यकताओं सहित सभी चीज़ों से ऊपर परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की आध्यात्मिक खोज को प्राथमिकता देने के लिए कहता है। □ निहितार्थ: परमेश्वर को पहले खोजकर, व्यक्ति का जीवन ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप हो जाता है, जिससे बदले में यह सुनिश्चित होता है कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ परमेश्वर के प्रावधान द्वारा पूरी हों। यह जीवन के लक्ष्यों में विश्वास और प्राथमिकता के बारे में है।

प्रेरितों के काम 8:26-40

□ पाठ: एक स्वर्गदूत फिलिप को एक रेगिस्तानी सड़क पर जाने का निर्देश देता है, जहाँ उसकी मुलाकात यशायाह पढ़ रहे एक इथियोपियाई हिजड़े से होती है। फिलिप धर्मग्रंथ की व्याख्या करता है, जिससे हिजड़े का धर्म परिवर्तन होता है और वह बपतिस्मा लेता है। □ संदर्भ: यह अंश फिलिप और इथियोपियाई हिजड़े की कहानी बताता है, जो ईसाई धर्म में परिवर्तित होने वाले गैर-यहूदियों का एक प्रारंभिक उदाहरण है। □ व्याख्या: धर्मग्रंथ के माध्यम से खोज: हिजड़ा धर्मग्रंथ के माध्यम से ईश्वर को समझने की सक्रिय रूप से खोज कर रहा है, जो

दर्शाता है कि ईश्वर की खोज में अध्ययन और पूछताछ शामिल हो सकती है। □ मार्गदर्शन: फिलिप की भूमिका दर्शाती है कि ईश्वर अपने खोजकर्ताओं का मार्गदर्शन करने के लिए दूसरों का उपयोग कैसे कर सकता है। यह दर्शाता है कि ईश्वर की खोज हमेशा एकाकी यात्रा नहीं होती; कभी-कभी, इसमें दैवीय योजनाएँ और समुदाय शामिल होते हैं।

प्रेरितों 17:11-12

□ पाठ: □□□□□; बेरिया के यहूदी थिस्सलनीका के यहूदियों से कहीं अधिक नेक स्वभाव के थे, क्योंकि उन्होंने बड़े उत्साह से संदेश ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्र की जाँच करते थे कि पौलुस की बातें सत्य हैं या नहीं। फलस्वरूप, उनमें से बहुतों ने विश्वास किया...□□□□□; □ संदर्भ: पौलुस और सिलास बेरिया में हैं, जहाँ वे आराधनालय में प्रचार करते हैं। □ व्याख्या: □ नेक स्वभाव: बेरिया के लोगों की सत्य की खोज में उनकी लगन के लिए प्रशंसा की जाती है। उन्होंने पौलुस के शब्दों को केवल स्वीकार नहीं किया; उन्होंने पवित्रशास्त्र के अनुसार उनकी जाँच की। □ दैनिक जाँच: यह परमेश्वर की इच्छा और सत्य को समझने के लिए सक्रिय, दैनिक प्रयास को दर्शाता है। उनकी खोज ने विश्वास को जन्म दिया, जो दर्शाता है कि परमेश्वर के स्वभाव और इरादों की सच्ची जाँच से आस्था उत्पन्न हो सकती है।

यिर्मयाह 29:13

□ श्लोक: □□□□□; जब तुम पूरे मन से मेरी खोज करोगे, तो मुझे पाओगे।□□□□□; □ संदर्भ: यिर्मयाह ने बाबुल में निर्वासितों को यह संदेश भेजा, और वादा किया कि यदि वे परमेश्वर की ओर लौटेंगे, तो उन्हें यरूशलेम में पुनर्स्थापित किया जाएगा और वापस लाया जाएगा। □ व्याख्या: यह श्लोक इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर को पाने के लिए सच्चे प्रयास और पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है, और यह वादा करता है कि जो लोग सच्चे मन से परमेश्वर की खोज करते हैं, उनके लिए परमेश्वर उपलब्ध है।

प्रेरितों 17:16-28

संदर्भ: स्थान: पौलुस एथेंस में है, जो अपने बौद्धिकता, दर्शन और बहुदेववाद के लिए प्रसिद्ध शहर है। एथेंस एक सांस्कृतिक केंद्र था जहाँ विचारों का आदान-प्रदान होता था और स्टोइसिज़्म और एपिक्यूरियनवाद जैसे विभिन्न विचारधाराएँ फली-फूलीं। परिस्थिति: सिलास और तीमोथी की प्रतीक्षा करते हुए, पौलुस शहर में मूर्तियों की बहुतायत देखकर बहुत व्याकुल था। उसने आराधनालय में यहूदियों और बाज़ार में दार्शनिकों के साथ वाद-विवाद किया। एरिओपैगस: पौलुस को अंततः एरिओपैगस ले जाया गया, जो एक पहाड़ी थी जहाँ एथेंस की परिषद कानूनी, दार्शनिक और धार्मिक मामलों पर चर्चा करने के लिए मिलती थी। यह उसके लिए शहर के कुछ प्रमुख विचारकों के समक्ष अपनी शिक्षाएँ प्रस्तुत करने का अवसर था। प्रेरितों के कार्य 17:16-28 की व्याख्या: पद 16-21: पौलुस एथेंसवासियों की धार्मिकता का उल्लेख करते हुए शुरुआत करता है, यहाँ तक कि □□□□□; अज्ञात ईश्वर□□□□□; की वेदी की ओर इशारा भी करता है। यह उसके लिए इस □□□□□; अज्ञात□□□□□; ईश्वर का उनसे परिचय कराने का आधार तैयार करता है। □ पद 22-23: पौलुस वेदी का उपयोग यह समझाने के लिए करते हैं कि जिस ईश्वर की वे अज्ञानता से पूजा करते हैं, वह संसार का सृष्टिकर्ता है, जो मानव निर्मित मंदिरों में नहीं रहता। यह उनकी बहुदेववादी और मूर्तिपूजा की प्रथाओं की आलोचना है, जो यह दर्शाती है कि उनकी खोज गलत दिशा में है। □ पद 24-25: वे समझाते हैं कि सृष्टिकर्ता होने के नाते ईश्वर को मनुष्यों से किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, जो उस आम धारणा को उलट देता है जिसमें देवताओं को कृपा या सुरक्षा के लिए बलिदान और भेंट की आवश्यकता होती थी। □ पद 26-27: पौलुस राष्ट्रों और ऋतुओं पर ईश्वर की संप्रभुता की बात करते हैं, जिसका अर्थ है कि ईश्वर ने मनुष्य जाति को इसलिए बनाया है ताकि वे उसकी खोज करें। खोज के बारे में यह महत्वपूर्ण पद है: □ पद 27: □□□□□; ईश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वे उसकी खोज करें और शायद उसकी ओर हाथ बढ़ाएँ और उसे पाएँ, यद्यपि वह हम में से किसी से दूर नहीं है।□□□□□; यह दर्शाता है कि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति, जिसमें ईश्वर को समझने और उससे जुड़ने की इच्छा होती है, लोगों को ईश्वर की ओर ले जाने के लिए बनाई गई है। इसका अर्थ यह है कि यदि लोग सच्चे मन से खोजेंगे, तो उन्हें ईश्वर अवश्य मिलेगा क्योंकि ईश्वर सुलभ है। श्लोक 28: पौलुस यूनानी कवियों के कथनों (□□□□□; क्योंकि उसी में हम जीते हैं, चलते हैं और हमारा अस्तित्व है□□□□□; और □□□□□; □#39; हम उसकी संतान हैं□#39;□□□□□;) का हवाला देते हुए इस बात की पुष्टि करते हैं कि उनके अपने दार्शनिकों ने भी इस ईश्वर की मानवता के साथ निकटता और माता-पिता जैसे संबंध को सहज रूप से महसूस किया है। यह उच्चतर शक्ति की खोज की सहज प्रवृत्ति को प्रमाणित करता है, लेकिन उस खोज की दिशा को मूर्तियों से हटाकर सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ता है।

व्यवस्थाविवरण 4:29

□ श्लोक: □□□□□; परन्तु यदि तुम वहाँ से अपने परमेश्वर यहोवा को खोजोगे, तो वह तुम्हें अवश्य मिलेगा, यदि तुम उसे पूरे मन और प्राण से खोजोगे।□□□□□; □ संदर्भ: यह मूसा द्वारा इस्राएलियों को प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करने से पहले दिए गए भाषण का अंश है। वह इस बात पर बल देता है कि परमेश्वर के प्रति निष्ठावान रहना कितना महत्वपूर्ण है, चाहे वे बिखरे हुए हों या कठिनाइयों का सामना कर रहे हों। □ व्याख्या: यहाँ पूरे मन से खोज करने पर बल दिया गया है। यह आश्चर्य करता है कि परमेश्वर दूर या अप्राप्य नहीं है, बल्कि सच्चे मन से खोजे जाने पर अवश्य प्राप्त होगा।

1 इतिहास 16:11

□ श्लोक: □□□□□; प्रभु और उसकी शक्ति की ओर देखो; सदा उसके मुख की खोज करो। □□□□□; □ संदर्भ: यह श्लोक दाऊद द्वारा लिखे गए धन्यवाद के भजन का एक भाग है, जब वाचा का संदूक यरूशलेम लाया गया था। □ व्याख्या: यह परमेश्वर की उपस्थिति और शक्ति की निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है, जो एक बार की घटना के बजाय एक सतत संबंध का संकेत देता है।

भजन संहिता 27:8

□ श्लोक: □□□□□; मेरा हृदय आपसे कहता है, □#39; उसके मुख की खोज करो! □#39; हे प्रभु, मैं तेरे मुख की खोज करूँगा। □□□□□; □ संदर्भ: दाऊद अपनी विपत्तियों के बीच परमेश्वर की उपस्थिति की कामना व्यक्त करता है, जो परमेश्वर पर उसके विश्वास को दर्शाता है। □ व्याख्या: यह परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संवाद को दर्शाता है, जहाँ अंतर्मन (हृदय) परमेश्वर के मुख की खोज करने के लिए प्रेरित करता है, जो घनिष्ठता और व्यक्तिगत संबंध को इंगित करता है।

भजन संहिता 105:4

□ श्लोक: □□□□□; प्रभु और उसकी शक्ति की खोज करो; उसकी उपस्थिति में निरंतर बने रहो! □□□□□; □ संदर्भ: भजन संहिता 105 एक ऐतिहासिक भजन है जो इस्राएल के लिए परमेश्वर के महान कार्यों का वर्णन करता है, अब्राहम के साथ वाचा से लेकर मिस्र से पलायन और प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश तक। यह भजन कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है:

1. धन्यवाद और स्तुति: यह इस्राएल के लोगों के प्रति परमेश्वर की निष्ठा और उनके द्वारा किए गए स्थायी वादों के लिए उन्हें धन्यवाद देने का आह्वान है।
2. ऐतिहासिक चिंतन: परमेश्वर के अतीत के कार्यों को याद करके, यह भजन परमेश्वर के भविष्य के कार्यों में विश्वास और आस्था को प्रोत्साहित करता है। यह परमेश्वर की वाचा के प्रति निष्ठा की याद दिलाता है।
3. निर्देश: यह नई पीढ़ियों को उनकी विरासत, ईश्वर के स्वरूप और उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया के बारे में सिखाता है। □ स्पष्टीकरण:
4. प्रभु की खोज करें: यह ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के लिए एक प्रोत्साहन है। इसका तात्पर्य केवल कभी-कभार की प्रार्थना या अनुष्ठान से कहीं अधिक है; यह ईश्वर को बेहतर ढंग से जानने के लिए निरंतर और सतत प्रयास का सुझाव देता है।
5. और उसकी शक्ति: यहाँ, भजनकार संभवतः ईश्वर की शक्ति का उल्लेख कर रहा है, जो मिस्र में विपत्तियों, लाल सागर के दो भागों में बँटने आदि जैसे ऐतिहासिक कृत्यों के माध्यम से प्रदर्शित हुई है। ईश्वर की शक्ति की तलाश करने का अर्थ हो सकता है उसकी सुरक्षा, अपने जीवन में उसकी सामर्थ्य की खोज करना, या ईश्वर को समस्त शक्ति और सामर्थ्य के स्रोत के रूप में पहचानना।
6. उनकी उपस्थिति की निरंतर खोज करें: यह ईश्वर के साथ निरंतर संबंध के महत्व पर बल देता है। □□□□□; निरंतर □□□□□; शब्द यह दर्शाता है कि यह खोज एक बार की घटना नहीं बल्कि जीवन भर चलने वाला प्रयास होना चाहिए। जिस समय यह लिखा गया था, उस समय ईश्वर की उपस्थिति वाचा के संदूक, तंबू और बाद में मंदिर से जुड़ी हुई थी, जहाँ यह माना जाता था कि ईश्वर अपने लोगों के बीच निवास करते हैं। हालाँकि, व्यापक आध्यात्मिक अर्थ में, यह विश्वासियों को केवल आवश्यकता के समय या विशिष्ट अनुष्ठानों के दौरान ही नहीं, बल्कि हमेशा ईश्वर के साथ संगति की स्थिति में रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

उनकी उपस्थिति की तलाश में

मत्ती 13:44-46

□ पाठ: □□□□□; स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे खजाने के समान है। जब एक व्यक्ति को वह मिला, तो उसने उसे फिर से छिपा दिया, और फिर खुशी से उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और वह खेत खरीद लिया। इसी प्रकार, स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो उत्तम मोतियों की खोज कर रहा है। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला, तो वह गया और उसने अपना सब कुछ बेच दिया और उसे खरीद लिया। □□□□□; □ संदर्भ: ये दृष्टांत मत्ती 13 में वर्णित दृष्टांतों की श्रृंखला का हिस्सा हैं, जहाँ यीशु भीड़ से बात करने के बाद अपने शिष्यों को निजी तौर पर समझाते हुए, रोजमर्रा की उपमाओं का उपयोग करके स्वर्ग के राज्य के स्वरूप का वर्णन करते हैं। □ व्याख्या: □ अनमोल खोज: छिपा हुआ खजाना और मोती परमेश्वर के राज्य के अपार मूल्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पाने के लिए सब कुछ त्यागने और प्रयास करने योग्य है। □ परमेश्वर की खोज: यह राज्य को एक □□□□□; अनमोल खोज □□□□□; के रूप में चित्रित करके परमेश्वर की खोज से जुड़ा है, जिसके लिए पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। यह विश्वासियों को उसी उत्साह के साथ परमेश्वर की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करता है जैसे कोई अमूल्य खजाने की खोज करता है, जो पूर्ण समर्पण के विषयों के अनुरूप है।

1 कुरिन्थियों 9:24-27

□ पाठ: □□□□□; क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में सभी धावक दौड़ते हैं, परन्तु पुरस्कार एक ही को मिलता है? इस प्रकार दौड़ो कि तुम्हें पुरस्कार मिले। खेलों में भाग लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति कठोर प्रशिक्षण लेता है। वे ऐसा उस मुकुट को पाने के लिए करते हैं जो क्षणभंगुर है, परन्तु हम उस मुकुट को पाने के लिए करते हैं जो सदा बना रहेगा। इसलिए मैं उस व्यक्ति की तरह नहीं दौड़ता जो लक्ष्यहीन दौड़ रहा हो; मैं उस मुक्केबाज की तरह नहीं लड़ता जो हवा में मुक्के मार रहा हो। नहीं, मैं अपने शरीर को बल देता हूँ और उसे अपना वश में कर लेता हूँ ताकि दूसरों को उपदेश देने के बाद मैं स्वयं पुरस्कार के लिए अयोग्य न हो जाऊँ। □□□□□; □ संदर्भ: पौलुस कुरिंथ की कलीसिया को लिख रहे हैं, अपने प्रेरित पद का बचाव कर रहे हैं और आध्यात्मिक अनुशासन को समझाने के लिए इस्थमियन खेलों (ओलंपिक के समान) से खेल उपमाओं का प्रयोग कर रहे हैं। □ व्याख्या: □ अनुशासित प्रयास: पौलुस मसीही जीवन की तुलना एक दौड़ या मुक्केबाजी मुकाबले से करते हैं, जहाँ खिलाड़ी एक नाशवान मुकुट के लिए कठोर प्रशिक्षण लेते हैं, और विश्वासियों को और भी अधिक प्रयास से अविनाशी पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। □ ईश्वर की खोज: यह पवित्रता और आस्था की निरंतर, आत्म-अनुशासित खोज के माध्यम से ईश्वर की खोज से संबंधित है। यह इस बात पर जोर देता है कि खोज निष्क्रिय नहीं है, बल्कि शाश्वत जीवन से वंचित होने से बचने के लिए एकाग्रता और धैर्य की आवश्यकता होती है।

इब्रानियों 11:6

□ श्लोक: □□□□□; और विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई उसके पास आता है उसे विश्वास करना चाहिए कि वह विद्यमान है और वह उन लोगों को प्रतिफल देता है जो सच्चे मन से उसकी खोज करते हैं। □□□□□; □ संदर्भ: यह इब्रानियों की पुस्तक के □□□□□; विश्वास के महानतम व्यक्तियों □□□□□; अध्याय से लिया गया है, जिसमें पुराने नियम के उन व्यक्तियों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने विश्वास के साथ जीवन व्यतीत किया और उत्पीड़न का सामना कर रहे प्रारंभिक ईसाइयों को प्रोत्साहित किया। □ व्याख्या: □ विश्वास और खोज: यह श्लोक विश्वास को सीधे परमेश्वर की खोज से जोड़ता है और उन लोगों को प्रतिफल का वादा करता है जो लगन से उसकी खोज करते हैं। □ निहितार्थ: यह इस बात को पुष्ट करता है कि विश्वास पर आधारित सच्ची खोज परमेश्वर को प्रसन्न करती है और दिव्य आशीर्षों की ओर ले जाती है, जिससे यह उसके पास जाने का एक मूलभूत सिद्धांत बन जाता है।

यशायाह 55:6

□ श्लोक: □□□□□; जब तक यहोवा मिल सकता है, तब तक उसकी खोज करो; जब तक वह निकट है, तब तक उससे प्रार्थना करो। □□□□□; □ संदर्भ: यह यशायाह की भविष्यवाणी का एक अंश है, जिसमें इस्राएल को आध्यात्मिक भटकाव के समय पाप से मुड़ने और परमेश्वर की दया को अपनाने का निमंत्रण दिया गया है। □ व्याख्या: □ खोज में तत्परता: यह तत्काल कार्रवाई का आग्रह करता है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर को पाने के अवसर हमेशा उपलब्ध नहीं हो सकते। □ निहितार्थ: परमेश्वर की खोज में समय पर पश्चाताप और प्रार्थना करना शामिल है, जो शीघ्रता से प्रतिक्रिया करने वालों के लिए सुलभता का वादा करता है।

भजन संहिता 63:1

□ श्लोक: □□□□□; हे परमेश्वर, आप मेरे परमेश्वर हैं, मैं पूरी लगन से आपकी खोज करता हूँ; मुझे आपकी प्यास है, मेरा सारा अस्तित्व आपके लिए तरसता है, इस सूखी और बंजर भूमि में जहाँ पानी नहीं है। □□□□□; □ संदर्भ: दाऊद का एक भजन, जो यहूदा के रेगिस्तान में, संभवतः शत्रुओं से भागते समय लिखा गया था, गहरी व्यक्तिगत भक्ति को व्यक्त करता है। □ व्याख्या: □ तीव्र लालसा: दाऊद रेगिस्तान में प्यास को आत्मा की परमेश्वर के लिए अत्यधिक आवश्यकता के रूपक के रूप में उपयोग करता है। □ परमेश्वर की खोज: यह खोज को एक भावनात्मक, सर्वव्यापी इच्छा के रूप में चित्रित करता है, जो कठिन समय में परमेश्वर की उपस्थिति की निकटता और आवश्यकता को उजागर करता है।

नीतिवचन 8:17

□ श्लोक: □□□□□; जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं उनसे प्रेम करता हूँ, और जो मेरी खोज करते हैं, वे मुझे पाते हैं। □□□□□; (यह वचन बुद्धि द्वारा कहा गया है, जिसे एक दिव्य गुण के रूप में दर्शाया गया है।) □ संदर्भ: नीतिवचन 8 में, बुद्धि मानवता को पुकारती है, सृष्टि में अपनी भूमिका का वर्णन करती है और लोगों को उसकी ओर ध्यान देने के लिए आमंत्रित करती है। □ व्याख्या: □ पारस्परिक प्रतिक्रिया: बुद्धि (अक्सर ईश्वर के भय से जुड़ी हुई) लगन से खोज करने वालों को मिलने का वादा करती है और जो उसकी खोज करते हैं, उनसे प्रेम करती है। □ ईश्वर की खोज: यह ईश्वर की खोज के एक भाग के रूप में उसकी बुद्धि की खोज पर लागू होता है, जो ईमानदारी से खोज करने वालों के लिए प्राप्ति का आश्वासन देता है।

2 इतिहास 7:14

□ श्लोक: □□□□□;यदि मेरे लोग, जो मेरे नाम से पुकारे जाते हैं, अपने आप को नम्र करें, प्रार्थना करें, मेरा मुख खोजें और अपने दुष्ट मार्गों से फिरें, तो मैं स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुनूंगा, और उनके पापों को क्षमा करूंगा और उनके देश को चंगा करूंगा।□□□□□; □ संदर्भ: मंदिर के समर्पण के समय सुलैमान की प्रार्थना पर परमेश्वर की प्रतिक्रिया, जिसमें राष्ट्रीय पुनर्स्थापना की शर्तें बताई गई हैं। □ व्याख्या: □ सामूहिक खोज: यह परमेश्वर को खोजने के लिए नम्रता, प्रार्थना और पश्चाताप का आह्वान करती है। □ निहितार्थ: खोज क्षमा और चंगाई की ओर ले जाती है, जो परमेश्वर की ओर लौटने वाले व्यक्तियों या समुदायों पर लागू होती है।

आमोस 5:4

□ श्लोक: □□□□□;यहोवा इस्राएल से कहता है: □#39;मेरी खोज करो और जीवित रहो;□#39;□□□□□; □ संदर्भ: नबी आमोस इस्राएल को अन्याय और मूर्तिपूजा के लिए न्याय की चेतावनी देते हुए, उनसे परमेश्वर की ओर लौटने का आग्रह करते हैं। □ व्याख्या: □ खोज के माध्यम से जीवन: परमेश्वर की खोज को सीधे अस्तित्व और सच्चे जीवन से जोड़ता है, पाप से होने वाले विनाश के विपरीत। □ निहितार्थ: परमेश्वर की खोज आध्यात्मिक जीवन्तता के लिए आवश्यक है, चेतावनियों के बीच इसे उद्धार के मार्ग के रूप में बल देता है।

भजन संहिता 105:4 का निरंतर अनुसरण

यशायाह 40:28-31

□ श्लोक: □□□□□;क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? प्रभु शाश्वत परमेश्वर है, पृथ्वी के छोरों का सृष्टिकर्ता। वह कभी थकता या कमजोर नहीं होता, और उसकी समझ को कोई नहीं समझ सकता। वह थके हुआओं को बल देता है और कमजोरों की शक्ति बढ़ाता है। यहाँ तक कि युवक भी थक जाते हैं और कमजोर हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं; परन्तु जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे अपनी शक्ति को फिर से प्राप्त करेंगे। वे चीलों के समान पंखों पर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे और नहीं थकेंगे, वे चलेंगे और कमजोर नहीं पड़ेंगे।□□□□□; □ संदर्भ: यशायाह की भविष्यवाणी का एक भाग जो निर्वासन के दौरान इस्राएल को सांत्वना देता है, और मानवीय कमजोरी के विपरीत परमेश्वर की शाश्वत शक्ति को उजागर करता है। □ व्याख्या: □ शक्ति की खोज: यह □□□□□;प्रभु और उसकी शक्ति की खोज करो□□□□□; का विस्तार है, जो परमेश्वर की प्रतीक्षा करने वालों (या उसकी खोज करने वालों) के लिए नवीनीकरण का वादा करता है, और उसे ऊर्जा के एक अक्षय स्रोत के रूप में चित्रित करता है। निरंतर प्रयास: उड़ने, दौड़ने और बिना थके चलने की कल्पना ईश्वर की उपस्थिति पर निरंतर निर्भरता को प्रोत्साहित करती है, और उनके अपरिवर्तनीय स्वभाव के माध्यम से विश्वास का निर्माण करती है।

भजन संहिता 9:10

□ श्लोक: □□□□□;और जो तेरा नाम जानते हैं, वे तुझ पर भरोसा रखते हैं, क्योंकि हे प्रभु, तूने अपने खोजकर्ताओं को नहीं त्यागा है।□□□□□; □ संदर्भ: दाऊद का एक भजन जिसमें परमेश्वर के न्याय और शत्रुओं से सुरक्षा के लिए उसकी स्तुति की गई है, और व्यक्तिगत उद्धार पर विचार किया गया है। □ व्याख्या: □ खोज के माध्यम से भरोसा: यह परमेश्वर की खोज को उसके नाम (स्वरूप) को जानने और उसकी वफादारी का अनुभव करने से जोड़ता है, यह आश्वासन देता है कि निरंतर खोज अटूट समर्थन की ओर ले जाती है। □ उपस्थिति पर आधारित: यह निरंतर परमेश्वर के दर्शन की खोज के विचार को सुदृढ़ करता है, क्योंकि यह वादा करता है कि वह खोजकर्ताओं के निकट रहता है, और आवश्यकता के समय उन्हें कभी नहीं छोड़ता।

भजन संहिता 34:10

□ श्लोक: □□□□□;जवान शेर भी अभाव और भूख से पीड़ित होते हैं; परन्तु जो यहोवा की खोज करते हैं, उन्हें किसी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होती।□□□□□; □ संदर्भ: दाऊद का एक और भजन, जो खतरे से बचने के लिए पागलपन का नाटक करने के बाद लिखा गया था, परमेश्वर के उद्धार का गुणगान करता है और दूसरों को उसकी भलाई का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करता है। □ व्याख्या: □ खोज में प्रावधान: परमेश्वर की शक्ति की खोज पर आधारित, यह श्लोक वादा करता है कि लगन से खोज करने वालों को आवश्यक चीज़ों की कमी नहीं होगी, जो मनुष्य/पशु संघर्षों की तुलना दिव्य आपूर्ति से करता है। □ निरंतर संबंध: यह प्रचुरता के मार्ग के रूप में निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है, भजन 105 जैसे ऐतिहासिक संदर्भों से जुड़ते हुए, इस्राएल के पूरे इतिहास में परमेश्वर के प्रावधान की याद दिलाता है।

भजन संहिता 24:6

□ श्लोक: □□□□□;यह उन लोगों की पीढ़ी है जो उसकी खोज करते हैं, जो याकूब के परमेश्वर के मुख की खोज करते हैं।□□□□□; □ संदर्भ: यह एक धार्मिक भजन है जिसका उपयोग संभवतः मंदिर की शोभायात्राओं के दौरान किया जाता था। यह वर्णन करता है कि कौन परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर आरोहण कर सकता है और पवित्रता तथा उसकी उपस्थिति में आरोहण पर बल देता है। □ व्याख्या: □ पीढ़ीगत खोज:

यह खोज; उसकी उपस्थिति की निरंतर खोज करो; की प्रतिध्वनि करता है, एक धन्य समुदाय की पहचान करते हुए जो परमेश्वर के मुख का अनुसरण करता है, और भजन 105 के ऐतिहासिक वर्णन के अनुसार याकूब (इस्राएल) के साथ वाचा से जोड़ता है। आरोहण में शक्ति: यह श्लोक इंगित करता है कि खोज परमेश्वर के पवित्र स्थान में खड़े होने की ओर ले जाती है, जहाँ उसकी शक्ति और महिमा का अनुभव होता है, जो एक सामूहिक, निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है।

2 इतिहास 15:2

श्लोक: और वह आसा से मिलने गया और उससे कहा, हे आसा, और समस्त यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो: जब तक तू यहोवा के साथ है, वह तेरे साथ है। यदि तू उसकी खोज करेगा, तो वह तुझे मिल जाएगा, परन्तु यदि तू उसे त्याग देगा, तो वह तुझे त्याग देगा। संदर्भ: यहूदा में सुधार के समय नबी अजरिया राजा आसा से बात कर रहे थे, और शत्रुओं पर विजय के बाद राष्ट्रीय पुनरुत्थान और निष्ठा का आग्रह कर रहे थे। व्याख्या: पारस्परिक उपस्थिति: यह परमेश्वर की उपस्थिति की खोज पर बल देता है, इस बात पर बल देते हुए कि निरंतर खोज उसकी निकटता और शक्ति सुनिश्चित करती है, जबकि त्याग से हानि होती है। ऐतिहासिक संबंध: भजन संहिता 105 में परमेश्वर के कार्यों की समीक्षा की तरह, यह वाचा के प्रति निष्ठा को याद रखने का आह्वान करता है, और राष्ट्रीय और व्यक्तिगत आशीष के लिए सक्रिय प्रयास को प्रोत्साहित करता है।

भजन संहिता 42:1-2

श्लोक: जैसे हिरण बहते पानी के लिए तरसता है, वैसे ही मेरी आत्मा हे परमेश्वर, तेरे लिए तरसती है। मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए, जीवित परमेश्वर के लिए प्यासी है। मैं कब आऊँगा और परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा? संदर्भ: कोरह के पुत्रों का एक भजन, जो निर्वासन या संकट के दौरान, संभवतः मंदिर की पूजा-अर्चना के कर्तव्यों से विमुख होकर, परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तड़प व्यक्त करता है। व्याख्या: उपस्थिति के लिए प्यास: यह तीव्र प्यास के रूपक के माध्यम से उसकी उपस्थिति को निरंतर खोजो; को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, खोज को आत्मा की एक सहज, निरंतर आवश्यकता के रूप में चित्रित करता है। तड़प में शक्ति: आँसुओं और उत्पीड़न के बीच, यह परमेश्वर के दर्शन की आशा में शक्ति पाकर खोज को बल देता है, जो उद्धार का स्मरण करने वाले ऐतिहासिक भजनों के समान है।

अध्ययन मार्गदर्शिका सुझाव

- अन्वेषण के लिए विषय: दृढ़ता (जैसे, मत्ती 7:7-8), पूर्ण समर्पण (जैसे, यिर्मयाह 29:13), पुरस्कार (जैसे, इब्रानियों 11:6), और निरंतर प्रयास (जैसे, भजन संहिता 105:4 और संबंधित)।
- आवेदन संबंधी प्रश्न: दैनिक जीवन में ईश्वर की खोज कैसे दिखती है? कौन सी बाधाएँ पूर्ण समर्पण के साथ ईश्वर की खोज में रुकावट डालती हैं, और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?
- क्रॉस-रेफरेंस टेबल:

विषय	मुख्य श्लोक	संबंध
अटलता	मत्ती 7:7-8, 1 इतिहास 16:11	निरंतर खोजबीन और तलाश को प्रोत्साहित करता है।
	यिर्मयाह 29:13, व्यवस्थाविवरण 4:29	इसमें पूरे मन और आत्मा से खोज करने पर जोर दिया जाता है।
पुरस्कार/प्रावधान	मत्ती 6:33, भजन संहिता 34:10	वादे किए गए हैं कि जरूरतें पूरी होंगी और चाहने वालों की कोई कमी नहीं होगी।
अनुशासन	1 कुरिन्थियों 9:24-27, यशायाह 40:28-31	यह खोज को शाश्वत शक्ति के प्रशिक्षण के समान बताता है।
तात्कालिकता/घनिष्ठता	यशायाह 55:6, भजन संहिता 63:1	इसके लिए तुरंत, प्यास जैसी तीव्र खोज की आवश्यकता है।

इस दस्तावेज़ का उपयोग व्यक्तिगत अध्ययन, समूह चर्चा या शिक्षण के लिए किया जा सकता है। यदि आगे विस्तार या संदर्भों की आवश्यकता हो, तो खोज; या अनुसरण; से संबंधित अतिरिक्त छंदों के लिए बाइबल शब्दकोश से परामर्श लें।